Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 6, August-2018, ISSN 2230-7540

अलवर शहर में जन सुविधाओं के विकास का भौगोलिक अध्ययन

Vijaya Yadav[1]* Dr. Vijay Kumar Verma[2]

[1] Research Scholar, Department of Geography, University of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan

[2] Associate Professor, Department of Geography, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश – ***जनसुविधाओं का अर्थ मूलभूत सुविधाओं से है जो लोगों को जीने के लिए आवश्यक होती हैं। जैसे स्च्छता, पानी, बिजली, सार्वजनिक परिवहन और स्कूल आदि ये जनसुविधाएँ हमारे जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक होती है इन के बिना जीवन बहुत ही कठिन हो जाता है! उदहारण के लिए पानी को लेते है साफ पानी की उपलब्धता सभी के लिए होना अति-आवश्यक है। मानव को यातायात के एवं परिवहन के साधनों की सुविधा भी आवश्यक होती है। इसी प्रकार चिकित्सा सुविधा, शिक्षा, विद्युत, सफाई व्यवस्था एवं स्वच्छ पर्यावरण मानव के लिए आवश्यक होता है अतः इस शोध पत्र में अलवर शहर में जन सुविधाओं का भौगोलिक अध्ययन किया गया है।***

शब्द कुँजी:- ***जनोपयोगी सुविधाएँ, पेयजल व्यवस्था, विद्युत वितरण, ठोस कचरा प्रबंधन, सीवरेज एवं जल निकास, शिक्षा, चिकित्सा, पर्यटन, मास्टर प्लान की समीक्षा एवं भावी विकास योजनाएँ।***

----------X----------

परिचय:

जनसुविधाओं से अभिप्राय उन सभी मूलभूत सुविधाओं से होता है जो मानव को जीने के लिए जरूरी होती हैं जैसे स्च्छता, पानी, बिजली, सार्वजनिक परिवहन और स्कूल आदि! ये जनसुविधाएँ हमारे जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक होती है इन के बिना जीवन बहुत ही कठिन हो जाता है! उदहारण के लिए पानी को लेते है साफ पानी की उपलब्धता सभी के लिए होना अति-आवश्यक है यदि साफ पानी नहीं मिलता तो लोगों में बहुत सी बीमारियाँ फैलने का डर होता है जैसे दस्त, पेचिसी और हैजा आदि! पानी से सम्बंधित बीमारियों के कारण भारत में 1600 लोग हर रोज मरते है और इनमें ज्यादातर बच्चे होते है जिस देश में जन सुविधाओं की पहुँच अधिक लोगों तक होगी वह पर लोगों के अंदर बिमारियां भी कम होती है और म्रत्यु दर भी कम होती है। अलवर शहर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शहर है, जो अरावली पर्वत श्रृंखला की प्राकृतिक घाटी में सुंदर झीलों और घने जंगलों से घिरा हुआ है। इसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की विकास नीतियों के कार्यान्वयन में एक महत्वपूर्ण भूमिका माना गया है। दिल्ली और जयपुर जैसे दो महत्वपूर्ण महानगरों के बीच स्थित यह शहर दोनों महानगरों से सटे एक महत्वपूर्ण शहर के रूप में कार्य करने की क्षमता रखता है। अलवर के महत्व को देखते हुए, इसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र योजना 2021 के तहत एक क्षेत्रीय शहर के रूप में पहचाना गया है और इसे भौतिक, आर्थिक और नागरिक बुनियादी ढांचे के समुचित विकास द्वारा इसे और अधिक कुशल बनाने का सुझाव दिया गया है। अलवर शहर में नगरीय विकास के साथ साथ जन सुविधाओं का विकास भी हुआ है अतः इस शोध पत्र में अलवर शहर की जन सुविधाओं का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है।

भौगोलिक प्रकृति और जलवायु:

अलवर 27 डिग्री 34 मिनट उत्तरी अक्षांश और 76 डिग्री 36 मिनट पूर्वी देशांतर पर स्थित है। यह राज्य की राजधानी जयपुर के उत्तर पूर्व में 150 किमी और राजधानी दिल्ली से 160 किमी की दूरी पर स्थित है। अलवर का मतलब समुद्र तल से 268 मीटर ऊपर है। शहर के पश्चिम में अरावली पर्वत श्रृंखला है। अरावली पहाड़ी की तलहटी में, पूर्व की ओर, अलवर शहर स्थित है। यहां की जलवायु शुष्क है और सर्दियों का प्रभाव गर्मियों में और सर्दियों के दौरान अधिक होता है। यहाँ औसत वर्षा 640 मिलीमीटर है लेकिन वर्षा की अनिश्चितता

www.ignited.in

बनी हुई है। लगभग 90 प्रतिशत वर्षा जून से सितंबर के महीनों में होती है। मई और जून के महीनों में, दिन में अधिकतम दैनिक तापमान 40 डिग्री से 46 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच और रात में तापमान 23 डिग्री से 28 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच होता है। जनवरी सबसे ठंडा महीना होता है। इस अवधि के दौरान, औसत अधिकतम दिन का तापमान 23°C और न्यूनतम 8°C होता है। सर्दियों में, कभी-कभी उत्तर की शीत लहर के प्रभाव में तापमान 2° से 4°C तक गिर जाता है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य:

1. अलवर शहर में नगरीय सुविधाओं के विकास का अध्ययन किया गया।
2. अलवर शहर में जन सुविधाओं का विश्लेषण किया गया है।

शोध परिकल्पना:

1. अलवर शहर में मानव उपयोगी पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं।
2. अलवर शहर मानव उपयोगी सुविधाओं का केन्द्र बिन्दु है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त आकड़ो का प्रयोग किया गया है जिनके आधार पर समस्या का विश्लेषण कर सम्भावित शोध परिणाम निष्कर्ष एवं सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

आंकड़ों के स्रोत:

किसी भी प्रकार के अध्ययन के लिए आँकड़ों की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत अध्ययन में उपयोग हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ें एकत्रित किये गये हैं। विभिन्न विभागों में अभिलेखित आँकड़ों का एकत्रीकरण जनसांख्यिकी विभाग, अलवर, जिला कलेक्टर कार्यालय, अलवर, अलवर नगर विकास प्राधिकरण, आवासन मंडल जयपुर, परिवहन विभाग, चिकित्सा विभाग, शिक्षा विभाग, जलदाय विभाग एवं विद्युत वितरण निगम से किया गया है।

जनोपयोगी सुविधाएँ:-

पेयजल व्यवस्था:

अलवर में पेयजल की व्यवस्था, 183 ट्यूबवेलों के माध्यम से की जाती है,जिनकी प्रतिदिन की उत्पादन क्षमता 31 एम.एल.डी.है। परन्तुभूमिगत जल के सतह में निरन्तर गिरावट के कारण, वर्तमान में केवल 26.8 जल ही उक्त स्त्रोतां से उपलब्ध हो रहा है। जलदाय विभाग द्वारा, 261 हैंडपम्पों के माध्यम से भी लोगों को पानी उपलब्ध कराया जा रहा है। दिन में 1 से 2 घंटे के लिए ही जल वितरण किया जा रहा है। इस प्रकार, वर्तमान में करीब 78 लीटर, प्रति व्यक्ति, प्रतिदिन की दर से जल उपलब्धता है। विगत वर्षो में अलवर शहर का विकास, बाहरी क्षेत्रों में अधिक हुआ है तथा कृषि भूमि पर निजी कालोनियाँ विकसित हो रही है, इन नये विकसित क्षेत्रों में पानी की समस्या अधिक है। पुराने शहर में भी जल वितरक पाइप लाईने पुरानी है तथा उनकी क्षमता भी कम है अतःठीक से जल वितरण नही होता है। भूमिगत जल की सतह में 0.8 मीटर प्रतिवर्ष की दर से गिरावट आ रही है। अधिक जल दोहन के कारण पानी की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। जन स्वास्थ्य

www.ignited.in

अभियांत्रिकी विभाग की जल गुणवत्ता आंकलन के अनुसार, यहाँ के पानी में नाईट्रेट, लौह एवं अन्य लवणों की मात्रा अधिक है।

अलवर शहर में पानी विवरण, 21 भूमि निर्मित जलाशयों (जी एल आर) एवं 22 उच्च जलाशयों के माध्यम से किया जा रहा है। जल का वितरण, शहर में 38.670 कनेक्शनों से किया जा रहा है। जिसका विवरण तालिका संख्या-1 में दर्शाया गया है।

जल कनेक्शन, अलवर - 2011

क्र.सं.	कनेक्शन का प्रकार	संख्या
1.	घरेलू	34,306
2.	व्यावसायिक	3,892
3.	उद्योग	119
4.	राज्य सरकार	169
5.	केन्द्रीय सरकार	151
6.	अन्य	33
	योग	38,670

(स्रोत: जल स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, अलवर)

विद्युत वितरण व्यवस्था:

अलवर में बिजली की आपूर्ति, राष्ट्रीय ग्रिड द्वारा की जाती है। दो 220 के.वी. के ग्रिड स्टेशन क्रमशः पुराने औद्योगिक क्षेत्र के उत्तर तथा मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र में बने हुये है। शहर में प्रतिदिन, 12.78 लाख यूनिट बिजली की आपूर्ति की जा रही है। सबसे अधिक विद्युत उपभोग औद्योगिक इकाईयों द्वारा किया जाता है। कुल 1989 औद्योगिक कनेक्शन है तथा प्रतिमाह 244.58 लाख यूनिट की खपत है। प्रतिदिन, औसत घरेलू बिजली की खपत लगभग 2.17 लाख यूनिट हैं। शहर में कुल 81,043 विद्युत कनेक्शन है तथा कुल 383.52 लाख यूनिट प्रतिमाह विद्युत का उपभोग किया जाता है। अलवर के विद्युत कनेक्षन का विवरण तालिका संख्या - 2 में दर्शाया गया है।

विद्युत कनेक्शन, अलवर - 2011 - 2012

क्र. सं.	कनेक्शन का प्रकार	संख्या	विद्युत उपभोग लाख यूनिट (मासिक)
1.	घरेलू	64,914	65.14
2.	व्यावसायिक	11,515	22.39
3.	सड़क प्रकाश	117	2.23
4.	उद्योग	1,989	244.58
5.	अन्य	2,508	49.18
	योग	81,043	383.52

(स्रोत: अलवर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, अलवर)

ठोस कचरा प्रबन्धन:

नगर पालिका क्षेत्र में प्रतिदिन 130 टन कचरा एकत्रित होता है। यह कचरा शहर के बाहर पूर्व में पहाड़ी के तलहटी में गुलेटा ग्राम, तहसील रामगढ़ में ड़ाला जाता है। सफाई कार्य हेतु, कुल 600 कर्मचारी ठेकेदार के कर्मचारियों सहित लगे हुए है। शहर के पुराने आबादी वाले12 वार्डो में नगर परिषद के कर्मचारियों द्वारा सफाई की जाती है। यहाँ दिन में एक बार सफाई की व्यवस्था है। शहर के अन्य 38 वार्डो में ठेकेदारों के माध्यम से सफाई की व्यवस्था है। इन क्षेत्रों में सप्ताह में दो से तीन बार सफाई की जाती है। मुख्य सड़कों की सफाई दिन में एक बार की जाती है। राज्य सरकार द्वारा, वैज्ञानिक पद्धति सेकचरा निस्तारण हेतुपूर्व में दिल्ली रोड के दक्षिण में अग्यारा ग्राम के पास एक स्थल चिन्हित किया गया है, जिसका निर्माण कार्य चल रहा है। अस्पताल के जैविक कचरे का निस्पादन मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र के पूर्व दिशा में ग्राम घूनीनाथ में होसबिन इन्सवेटर लिमिटेड कम्पनी द्वारा स्थापित संयत्र में किया जा रहा है। मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र का सामान्य ठोस अवशिष्ट पदार्थ लै-लेण्ड फैक्टी के पूर्व में रीकों द्वारा निर्धारित स्थल में किया जा रहा है परन्तु यह स्थल वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर विकसित नहीं किया गया है। औद्योगिक क्षेत्र के परिसंकटमय अवषिष्ट पदार्थ को उदयपुर में स्थित संयंत्र में भेजा जाता है। बड़े औद्योगिक इकाईयों द्वारा द्रव अवषिष्ट पदार्थ के निष्पादन के लिए उनके स्वयं के संयंत्र स्थापित है, अन्य औद्योगिक इकाईयों के द्रव अवशिष्ट के लिए रीको द्वारा एक संयुक्त उपचार संयंत्र का निर्माण किया जा रहा है।

सीवरेज एवं जल निकास व्यवस्था:

शहर के अधिकांश क्षेत्रों में अभी सीवरेज व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। वर्तमान में सीवरेज योजना का कार्य राजस्थान शहरी ढ़ाचा विकास संस्थान द्वारा किया जा रहा है। सम्पूर्ण शहर के लिए एक सीवरेज योजना स्वीकृत है जिसके निस्तारण के लिए, अग्यारा ग्राम में पास एक सीवरेज ट्रिटमेंट प्लांट का निर्माण किया जा रहा है। सीवरेज योजना के अन्तर्गत, नगर विकास न्यास की योजनाएँआवासन मण्डल की आवासीय कॉलोनियाँ एवं विकसित शहरी क्षेत्र आदि सम्मिलित किये गये है।

श्मशान एवं कब्रिस्तान:

अलवर में प्रमुखतः 4 कब्रिस्तान एवं 12 श्मशान है। इसमें से तीजकी, प्रताप बांध, एन.ई.बी., भूरासिद्ध के श्मषान विकसित किये गये है तथा यहाँ पर पेयजल, शौचालय, छतरी एवं बैठनें के लिए स्थल का प्रावधान किया गया है परन्तु अन्य श्मशान अविकसित है, इनमें समुचित जनसुविधाओं का अभाव है।

परिसंचरण:

अपने क्षेत्र का प्रमुख प्रशासनिक एवं व्यावसायिक केन्द्र होने के कारण, अलवर सड़कों द्वारा दिल्ली, जयपुर, भरतपुर, मथुरा, रेवाड़ी, नारनौल आदि नगरों से जुड़ा हुआ है। दिल्ली-अहमदाबाद वाया जयपुर रेलवे लाईन पर, यह एक प्रमुख स्टेशन है। अलवर-मथुरा बड़ी रेलवे लाईन के निर्माण के बाद,

www.ignited.in

इसका देश के पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी प्रदेशों से भी सीधा सम्पर्क स्थापित हो गया है।

रेल यातायात:-

दिल्ली-अहमदाबाद बड़ी रेलवे लाईन पर स्थित होने के कारण, अलवर इस मार्ग का एक प्रमुख स्टेशन है। यहाँ से प्रतिदिन 30 यात्री गाड़ियों का आवागमन होता है। यहाँ से दिल्ली, मथुरा, अमृतसर, अहमदाबाद, जोधपुर, देहरादूर, हरिद्वार आदि स्थानों के लिए यात्री गाड़ी सुविधा उपलब्ध है।

रेलवे लाईन पर वर्तमान में बाईपास रोड एवं दिल्ली रोड पर ओवरब्रिज बने हुए है। रेलवे स्टेशन के सामने पर्याप्त पार्किंग स्थल उपलब्ध नहीं है तथा पूर्व की तरफ से आने के लिए केवल एक ओवरब्रिज है जिसके कारण मुख्य सड़क पर यातायात अवरूद्धता की समस्या बनी रहती है।

अलवर शहर, तीन राज्य राजमार्गो क्रमशः

राजमार्ग संख्या-13 शाहपुर-अलवर-दिल्ली राज्य राजमार्ग, (जो पहले राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-8 का भाग था)

राज्य राजमार्ग संख्या-14 बहरोड़ से भरतपुर वाया अलवर-डीग

राज्य राजमार्ग संख्या-25 गंगापुर - सिकन्दरा - अलवर - भिवाड़ी पर स्थित है। इसके अतिरिक्त जिला स्तरीय सड़के है, जो इसे जिले के अन्य स्थानों जैसे कोटकासिम, हरसौली, बानसूर, नारायणपुर, कठूमर आदि से जोड़ती है।

अलवर शहर की आन्तरिक सड़क संरचना में विविधता है। पुराने शहर की सड़के संकरी एवं टेढ़ी-मेढ़ी है। इनकी चैड़ाई 3 से 7 मीटर के बीच ही है। बाहरी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत चैड़ी सड़के है। शहर की 6 मुख्य सड़के मनु मार्ग, रघु मार्ग एवं नरू मार्ग, उत्तर से दक्षिण दिषा में एवं जय मार्ग, मंगल मार्ग और विनय मार्ग, पूर्व से पश्चिम दिशा में है। इन सड़कों की चैड़ाई, 25 से35 मीटर तक है अलवर शहर के बाहरी क्षेत्र के चारों तरफ, एक नवनिर्मित बाईपास रोड है, जो उत्तर में बहरोड रोड़ से प्रारम्भ होकर तिजारा रोड, दिल्ली रोड एवं राजगढ़ रोड को जोड़ता है। यद्यपि बाहरी क्षेत्रों में चैड़ी सड़कों के निर्माण हो जाने के कारण, अलवर में अपेक्षाकृत सड़कों पर वाहन भार कम हुआ है परन्तु पुराने शहर के अन्दर मुख्य वाणिज्यिक केन्द्र स्थित होने के कारण यातायात अवरूद्धता की समस्या बनी रहती है।

राजस्थान अरबन इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट प्रोग्राम (आर.यू.आई.डी.पी.) द्वारा शहर के विभिन्न सड़कों पर, प्रतिदिन औसत वाहन भार का सर्वेक्षण किया गया है अलवर में 14 धर्मशालाएँ है जिनमें सुगना बाई धर्मषाला, इमरती देवी धर्मशाला, अग्रवाल धर्मषाला, जैन धर्मशाला, पुरूषार्थी धर्मशाला आदि प्रमुख है। इसके अलावा यहाँ पर 10 सामुदायिक केन्द्र विभिन्न आवासीय कॉलोनियों में स्थित है। यहाँ पर 2 प्रमुख डाकघर क्रमशः मोती डूंगरी के समीप एवं हास्पिटल चैराहे के पास स्थित है। नगर के 5 पुलिस थाना क्रमशः घंटा घर, भवानी तोप का चैराहा, शिवाजी पार्क स्कीम, मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र एवं तुलेडा रोड चैराहे के पास स्थित है। इसके अतिरिक्त मोती डूंगरी के पास एक महिला पुलिस थाना भी है। यहा पर 3 टेलीफोन एक्सचेंज भी है जिसमें 16,200 कनेक्शन हैं।

शैक्षणिक:

शैक्षणिक दृष्टि से अलवर शहर बहुत सम्पन्न है। यहाँ पर 10 महाविद्यालय है जिनमें राजऋषि राजकीय महाविद्यालय, बाबू सोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय एवं गौरी देवी महिला महाविद्यालय प्रमुख है। यहाँ पर 7 इन्जिनियरिंग कॉलेज, 12 बी.एड़ कॉलेज, 19 औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, 3 पालीटेकनिक एवं 8 नर्सिग कॉलेज तथा चिकित्सा विद्यालय है।

वर्तमान में अलवर, उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण क्षेत्र में स्थापित हो चुका है। तकनीकी षिक्षण केन्द्रों की संख्या में निरन्तर बढ़ोतरी हो रही है तथा बाहर से आकर छात्र यहाँ शिक्षा ग्रहण कर रहे है।

अलवर शहर में में 81 प्राइमरी स्कूल, 45 उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं 138 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय है। अलवर में शैक्षणिक संस्थाओं का विवरण तालिका सँख्या 3 में दिया गया है।

तालिका - 10

शिक्षण संस्थाओं का विवरण, अलवर - 2011

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	शिक्षण संस्थाओं की संख्या			छात्रों की संख्या		
		राजकीय	निजी	योग	राजकीय	निजी	योग
1.	प्राथमिक विद्यालय	44	37	81	2802	3,768	6,570
2.	उच्च प्राथमिक विद्यालय	34	11	45	4271	5,07	4,778
3.	माध्यमिक-उच्च माध्यमिक	13	125	138	4769	20,822	25,591
4.	महाविद्यालय	5	5	10	19,480	17,91	21,271
5.	इंजिनियरिंग कॉलेज	--	7	7	--	10,167	10167
6.	बी.एड. कॉलेज	--	12	12	--	1,240	1240
7.	आई.टी.आई. व्यावसायिक	3	19	22	2,954	1120	4074
8.	नर्सिंग / मेडिकल	1	7	8	150	1,275	1,425
9.	प्रबन्धन कॉलेज	--	3	3	--	390	390
10.	एस.टी.सी.	1	1	2	100	168	268
11.	होम्योपैथिक-यूनानी मेडिकल कॉलेज	--	2	2	--	400	400
	योग	**99**	**226**	**325**	**33,276**	**65,538**	**98,814**

(स्रोत: जिला शिक्षाधिकारी कार्यालय, प्राथमिक एवं माध्यमिक, अलवर एवं जिला आयोजना संगठन द्वारा संकलित)

चिकित्सा:

अलवर में चिकित्सा सुविधा उच्च स्तर की है। यहाँ पर 2 मुख्य राजकीय चिकित्सालय शहर के अन्दर स्थित है, जिसमें एक

www.ignited.in

सामान्य चिकित्सालय तथा दूसरा महिला चिकित्सालय है, इन दोनों में कुल 487 शैयाओं की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त 2 होम्यिपैथिक, 2 आयुर्वेदिक, 1 सैनिक चिकित्सालय एवं 1 कर्मचारी राज्य बीमा औषधालय है। यहाँ पर 4 डिस्पेंसरी एवं जिला क्षय निवारण केन्द्र है। विगत वर्षो में यहाँ अनेक निजी चिकित्सालयों की स्थापना हुई है, जिसमें कुछ उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान कर रहे है। यहाँ की चिकित्सा सुविधाओं का विवरण तालिका संख्या-4 में दर्शाया गया है।

तालिका - 11

चिकित्सा सुविधाएँ, अलवर - 2011

क्र.सं.	चिकित्सालय का नाम	चिकित्सालयों की संख्या	शैयाओं की संख्या
1.	सामान्य चिकित्सालय	4	581
2.	डिस्पेंसरी	4	-
3.	आयुर्वेदिक चिकित्सालय	2	10
4.	होम्योपैथिक	2	--
5.	क्षय निवारण केन्द्र	1	--
6.	निजी चिकित्सालय	66	1533
	योग	79	2124

(स्रोत: जिला स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय एवं सर्वेक्षण)

मेले एवं पर्यटन सुविधाएँ:

अलवर में सिलीसेड़ झील, सरिस्का बाघ अभ्यारण्य, बाला किला, सिटी पैलेस, पुरजन विहार, जयसमन्द झील आदि प्रमुख पर्यटक स्थल है। अलवर के ही समीप स्थित तालवृक्ष, नीलकण्ठ, भर्तृहरि, पाण्डुपोल एवं नन्दलेश्वर जैसे आकर्षण केन्द्रों के कारण भी, यहाँ पर अधिक संख्या में देशी-विदेशी पर्यटकों का आगमन होता है। अलवर जिले में प्रतिवर्ष 2 से 3 लाख पर्यटक आते है। विगत 3 वर्षो में यहाँ में पर्यटकों की संख्या में कमी आई है, इसका मुख्य कारण सरिस्का में बाघों की संख्या में भारी कमी है

मास्टर प्लान की समीक्षा:

अलवर शहर का प्रथम मास्टर प्लान, वर्ष 1988 से 2001 तक केलिए बनाया गया था, जिसको राज्य सरकार द्वारा जारी अधिसूचना प.स.एफ 1(11) टी.पी/2/72 दिनांकः 06/02/1990 द्वारा अनुमोदन किया गया। इस मास्टर प्लान में अलवर के विकास के प्रस्ताव, मुख्यतः राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रीय योजना की नीतियों को दृष्टिगत रखते हुए तैयार किये गये थे। अलवर का नया मास्टर प्लान बनाने से पहले यह आवश्यक है कि अलवर के पूर्व मास्टर प्लान के प्रस्तावों की समीक्षा की जाये तांकि मास्टर प्लान की नीतियों एवं प्रस्तावों के क्रियान्वयन के बारे में जानकारी मिल सके, जो नये मास्टर प्लान के नीतियों एवं विकास के प्रस्तावों के निर्धारण में सहायक सिद्ध हो सके। पूर्व मास्टर प्लान की समीक्षा मास्टर प्लान के प्रस्तावित एवं वास्तविक स्थिति के अनुरूप निम्न बिन्दुओं के संदर्भ में की गयी है।

विकास की भावी योजना:

अलवर. वर्ष 2018 में अलवर जिले ने विकास के कई सोपान तय किए, लेकिन बहुत अभी शेष हैं। नई उम्मीदों के साथ नए साल वर्ष 2019 की शुरुआत होगी। जिलावासियों को नए साल से 19 उम्मीद पूरी होने की उम्मीदें हैं। इन उम्मीदों को पंख लगे तो अलवर जिला विकास की नई ऊंचाइयों को छू सकेगा।

- ► बेहतर स्वास्थ्य के लिए अलवर में हो मेडिकल कॉलेज की शुरुआत।
- ► जिले में पेयजल व सिंचाई की समस्या का निदान के लिए चम्बल का पानी अलवर तक आए।
- ► शिक्षा के क्षेत्र में अलवर नए कीर्तिमान स्थापित कर सके, इसके लिए राजर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय को खुद का भवन मिले और यहां उच्च स्तरीय अध्ययन की सुविधा मिले।
- ► अलवर का दिल्ली, मुम्बई, जयपुर, जोधपुर सहित अन्य बड़े शहरों से अलवर का हवाई सम्पर्क जुड़ सके, इसके लिए कोटकासिम में एयरपोर्ट की जल्द स्थापना हो।
- ► अलवर को दिल्ली व जयपुर से जोडऩे के लिए मेट्रो रेल सुविधा की शुरुआत हो। हाई स्पीड ट्रेन का प्रोजेक्ट हो साकार।
- ► जिले का भिवाड़ी, बहरोड़, नीमराणा, मुण्डावर, लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र में बिछे रेल लाइन। यात्रियों को मिले रेल सुविधा।
- ► जिले में बड़ी उद्योग इकाइयां स्थापित हो और स्थानीय युवाओं को रोजगार मिले।
- ► अलवर जिले में सडक़ों की हालत में सुधार हो, जिससे सडक़ दुर्घटना में कमी आए और नौनिहालों की जान बच सके।
- ► अलवर शहर समेत पूरे जिले में सफाई की माकूल व्यवस्था हो, कहीं भी कचरे के ढेर नहीं दिखे। सफाई की रैंकिंग में अलवर अव्वल नम्बर पर आए।

- एमआईए को पुनर्जीवन मिले, उद्यमियों को विशेष पैकेज देकर बड़े उद्यमियों को निवेश के लिए आकर्षित करें।
- अलवर शहर ही नहीं, पूरा जिला अतिक्रमण से मुक्त हो, जिससे व्यापार को पंख लग सके।
- अलवर में पटरी पार इलाके में बालिकाओं के लिए सीनियर सैकण्डरी स्कूल खुले, जिले में भी बालिका शिक्षा को भी मिले बढ़ावा।
- अलवर शहर सहित जिले के शहरी क्षेत्रों में पार्किंग की व्यवस्था हो।
- सरिस्का में बाघों का संरक्षण बेहतर तरीके से हो, जिससे अलवर की ख्याति विदेशों तक पहुंचे।
- अलवर में मिनी सचिवालय का निर्माण जल्द पूरा हो और सभी सरकारी विभाग एक छत के नीचे शुरू हो।
- अलवर, भिवाड़ी में सीईपीटी संयंत्र शुरू हो, जिससे उद्योगों से निकलने वाले दूषित पानी का उपचार हो सके।
- अलवर में ट्रैफिक प्लान बने, जिससे शहर की यातायात व्यवस्था में सुधार हो सके।
- अलवर में शहरी परिवहन की व्यवस्था हो, जिससे सडक़ों पर बेतरतीब तरीके से दौड़ते वाहनों से लोगों को सुरक्षा मिल सके।
- एनसीआर योजना का अलवर जिले को पूरा लाभ मिले, जिससे जिले के विकास को पंख लग सके।

अलवर. मास्टर प्लान की पालना नहीं होने से अलवर शहर करीब 10 साल पीछे जा चुका है। साल 2001 में बने मास्टर प्लान के अनुसार अलवर शहर की जनसंख्या 2011 तक करीब 5 लाख के आसपास होनी चाहिए थी। इतनी जनसंख्या के लिए मास्टर प्लान के अनुसार ही विकास के काम होने थे। ऐसा नहीं होने के कारण अब जून 2018 में भी शहर की जनसंख्या 5 लाख नहीं हो सकी है।

निष्कर्ष:

जिन शहरों में तेजी से जनसंख्या बढ़ी उसका दूसरा पहलू विकास से जुड़ा है। शहर का विकास होता है तो वहां रोजगार के अवसर खड़े होते हैं। इनफ्रास्ट्रक्चर दिखने के बाद जिले व बाहर के लोगों की आबादी वहां तेजी से बढ़ी है। खासकर औद्योगिक विकास के कारण। लेकिन अलवर शहर का सबसे पुराना मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र आगे बढऩे की बजाय पीछे जा रहा है। अलवर में वर्ष 1998 में पहला मास्टर प्लान तैयार हुआ। जिसे 1990 में लागू किया गया। 1990 से 2001 तक पहला मास्टर प्लान बनाया गया। जिसका बाद में 2011 तक विस्तार कर दिया गया। उस समय यह माना गया था कि वर्ष 2011 तक अलवर शहर की आबादी करीब पांच लाख पहुंच जाएगी। इतना विकास व रोजगार के अवसर होंगे। जबकि इस समय 2018 में भी शहर की आबादी करीब 4.5 लाख है। वर्ष 2011 में तो शहर की जनसंख्या केवल 3.81 लाख ही पहुंच सकी। खासकर हम इसलिए पिछड़ गए जहां मेडिकल सुविधा होनी चाहिए थी वहां नहीं मिली। पर्यटन, स्पोर्ट, स्कूल, कॉलेज, चैड़ी सडक़ें, बड़ी टाउनशिप व औद्योगिक क्षेत्र का विकास नहीं होने से रोजगार व बढ़ते शहर की राह रुकी है। यहां सडक़ों पर अतिक्रमण हैं। बड़े भवनों में पार्किंग नहीं है। छोटी कॉलोनियों में बहुमंजिला इमारत बन गई। अस्पताल व स्कूल भी रिहायशी इलाकों में बन गए। पर्यटन क्षेत्रों का विकास नहीं हुआ। इन सब कारणों के कारण अलवर शहर आगे की बजाय पीछे चलता जा रहा है। भले ही मास्टर प्लान में सब सुविधाओं के विकल्प हैं लेकिन उसके अनुसार शहर नहीं बढ़ रहा। तभी यहां जनसंख्या मास्टर प्लान की तुलना में काफी कम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. अधिवास भूगोल, डॉ. यू. बी. सिंह, जवाहर पब्लिकेशन-डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
2. अधिवास भूगोल, डॉ. एस.डी. मौर्य, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
3. नगरीय भूगोल, डॉ. सुरेश चन्द्र बंसल, मिनाक्षी पब्लिकेशन, नई दिल्ली
4. नगरीय भूगोल, हरीश कुमार खत्री, कैलाश पुस्तक भवन, भोपाल, मध्यप्रदेश
5. नगरीय भूगोल, डॉ. ओ. पी. सिंह, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
6. अधिवास भूगोल, डॉ. रामयज्ञ सिंह, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
7. परिवहन विभाग, जिला अलवर
8. अलवर का मास्टर प्लान 2013

www.ignited.in

9. जिला कलेक्टर कार्यालय, अलवर

10. सूचना जनसंपर्क विभाग, अलवर

11. जिला सांख्यकीय कार्यालय, अलवर

12. आवासन मंडल कार्यालय, जयपुर

13. राजस्थान पत्रिका रिपोर्ट 2018

Corresponding Author

Vijaya Yadav*

Research Scholar, Department of Geography, University of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan